

डीआरडीओ के दल ने जानी योग की बारीकियां

हरिद्वार: रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) दिल्ली का उच्च स्तरीय दल देवसंस्कृति विश्वविद्यालय पहुंचा। दल ने योग, आयुर्वेद व अध्यात्म के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की। दल का नेतृत्व कर रहे डीआरडीओ के डायरेक्टर जनरल डा. मानस मण्डल ने कहा कि विश्वविद्यालय योग, आयुर्वेद एवं अध्यात्म को जन-जन तक पहुंचाने में जो सार्थक पहल कर रहा है, वह प्रशंसनीय है। प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने दल को देसंविदि में चल रहे योग, आयुर्वेद एवं अध्यात्म के कार्यक्रम एवं किये जा रहे शोध कार्यों की विस्तृत जानकारी दी।



डीआरडीओ के डायरेक्टर जनरल डा. मानस मंडल को सम्मानित करते देसंविदि के प्रतिकुलपति डा. चिन्मय पंड्या।

जागरण

डीआरडीओ के सचिव डा. एस क्रिस्टफर ने देसंविदि के साथ मिलकर योग एवं आयुर्वेद के क्षेत्र में साथ कार्य करने की इच्छा जताई। प्रतिकुलपति ने उन्हें आश्वस्त किया कि प्राचीन पद्धतियों को लेकर वह हमेशा शोध संबंधी कार्यों को साथ मिलकर करते रहेंगे। इस अवसर पर डीआरडीओ के कई वरिष्ठ अधिकारी एवं देसंविदि के योग व आयुर्वेद विभाग के प्रवक्तागण उपस्थित थे।

कृषि, बागवानी, मिसाइल टेक्नोलॉजी पर किया मंथन

शूलिनी विश्वविद्यालयमें चल रही बहु कार्यात्मक विकसित पदार्थों पर आयोजित राष्ट्रीय अधिवेशन शनिवार को संपन्न हुआ। अधिवेशन शूलिनी विश्वविद्यालय के हिमालयन सेंटर ऑफ नैनोटेक्नोलॉजी, परमाणु ऊर्जा विभाग (डीएई) रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) के संयुक्त तत्वावधान से आयोजित किया गया। अधिवेशन में कृषि, बागवानी, सेन्सर और मिसाइल टेक्नोलॉजी, फूड टेक्नोलॉजी बायोटेक्नोलॉजी विषयों पर विचार रखे गए।

अधिवेशन में भाग ले रहे विशेषज्ञों ने इस बात पर सहमति जताई कि बेसिक और अनुप्रयुक्त विज्ञान जैसे नैनोटेक्नोलॉजी, माइक्रोबायोलोजी, फार्मास्यूटिकल साइंस, इंजीनियरिंग और बायोटेक्नोलॉजी, के साथ मिल कर काम कर रहे हैं परंतु इसके बीच की दूरी को जल्द ही समाप्त करने की जरूरत है। अधिवेशन के अंतिम दिन आईआईसी विश्वविद्यालय बददी के उप-कुलपति प्रो. महावीर सिंह गेस्ट ऑफ ऑनर रहे। उन्होंने लेक्चर में मेगनेटिक नैनो टेक्नोलॉजी और उसके अनुप्रयोगों पर चर्चा की। उन्होंने छात्रों से आग्रह किया की वे रिसर्च को जमीनी स्तर तक ले जाएं ताकि हर वर्ग को इसका फायदा मिल सकें।

विवि के उप कुलपति प्रो पीके खोसला ने कहा कि नैनोटेक्नोलॉजी और बहु कार्यात्मक विकसित पदार्थों पर अनुसंधान में हमारा देश अभी काफी पीछे है और यह समय कि मांग है कि हम इसमें तेजी लाएं क्योंकि इसका इस्तेमाल लगभग हर क्षेत्र में हो रहा है। उन्होंने छात्रों से आग्रह किया की वह मेटाफिज़िक्स के विषय पर भी अनुसंधान करें। सीएसआईआर आईजीआईबी दिल्ली की स्वाति सिंह ने अपने लेक्चर में इंसानों में हृदयरोग के शीघ्र निदान में उपयोग में लाए जाने वाले डीएनए सेन्सर में हुए विकास पर चर्चा की। यूएचएफ नौपी की डॉ. मोनिका शर्मा ने कृषि और बागवानी में रोग प्रबंधन में नैनोटेक्नोलॉजी की भूमिका के बारे में बताया। विख्यात वैज्ञानिक और गेस्ट ऑफ ऑनर प्रो. ज्योति धर ने नैनोटेक्नोलॉजी का कम्प्यूटेशनल फीजिक्स में महत्व बताया। शूलिनी विश्वविद्यालय के डॉ. नवीन ने अपनी रिसर्च में बताया कि कैसे सोने और चांदी के नैनोपार्टिकल का इस्तेमाल खाने में मिलावट को जांचने के लिए किया जा सकता है।

250 प्रतिभागी पहुंचे

डीआरडीओकेडॉ. विजय कुमार ने माइक्रो इलेक्ट्रिक मैकेनिकल सिस्टम और रक्षा क्षेत्र में उसके उपयोग पर अपनी रिसर्च साझा की। टीबीआरएल चंडीगढ़ से प्रीति रानी, आशीष सैनी और वीरेंद्र सिंह ने भी इस मौके पर अपनी रिसर्च के बारे में बताया। डीआरडीओ के एसोसिएट निदेशक प्रविंद्र कुमार, गोविंद बल्लभ पंत हिमालय पर्यावरण एवं विकास संस्थान कुल्लू के केसी कुनियाल, डॉ. एससी गाइरोला, एमएमयू मुल्लाना से डॉ. संजय पंवर, शूलिनी विश्वविद्यालय के संकाय सदस्य और छात्रों के अलावा देश भर से 250 प्रतिभागियों ने अधिवेशन में भाग लिया।

शूलिनी में आयोजित राष्ट्रीय अधिवेशन में हिस्सा लेने वाले छात्र विशेषज्ञों के साथ।

Pune: DIAT, Oriental sign MoU to develop incubation centre for defence products

The MOU also provides for establishing an incubation centre to help development of new products for defence, as import substitute or otherwise.

The Defence Institute of Advance Technology (DIAT), a deemed university under DRDO, and Oriental Rubber Industries Pvt Limited, signed a Memorandum of Understanding (MoU) for establishing an incubation centre to develop new defence products. The MoU was signed by Cmde (Retd) AK Sinha, registrar, DIAT, and HP Srivastava, Head, HR & Commercial of Oriental, in presence of Dr S Pal, V-C, DIAT; Vikram Makar, CMD; and Vishal Makar, MD, Oriental.

The MoU broadly covers exchange of students/employees for training/higher education, joint research and development in applied futuristic areas of science and technology, development of products/process and research in polymer composites with nano fillers, said an Oriental release.

The MOU also provides for establishing an incubation centre to help development of new products for defence, as import substitute or otherwise. The incubation centre would be established at the DIAT campus to take forward the Make In India programme and would be named Diat-Oriental Incubation Centre, the release added.